Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-IV, May 2011

विश्व विद्यालयीन पुरूष तथा महिला खिलाड़ियों के मध्य बुद्धि तथा सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अजय करकरे: प्राचार्य, रानी लक्ष्मीबाई महिला महाविद्यालय, सांवरगांव, नागपुर
भारत चालसे: कला व विज्ञान महिला महाविद्यालय, शहादा जि. नंदुरबार.

प्रस्तावना :

पिछले कुछ सालों से खेल मनोविज्ञान के अंतर्गत बुद्धि तथा सृजनशीलता के संशोधन में वृद्धि होती पायी गई है। यह संकल्पना क्या है? यह किस तरह से खेलकूद के प्रदर्शन में मदद कर सकती है तथा हम किस तरह से बुद्धि तथा सृजनशीलता का विकास कर सकती है। मानसिक विकास यह व्यक्तिगत स्वरूप का होता है। यह भी सत्य है कि मानसिक विकास तथा शारिरिक विकास व अन्य विकास का आधार है। शारिरिक विकास की प्रकृति से हम सब परिचित हैं। मानसिक विकास का संबंध स्मृति, तर्कशक्ति, निर्णयन क्षमता, अवधान, नैतिक विचार, समझने की शक्ति, कल्पना शक्ति तथा बुद्धि से है। स्मृति का संबंध बुद्धि से होता है, साथ ही स्मृति का संबंध व्यक्ति के स्वास्थ तथा रूचि पर निर्भर होता है।

बुद्धि

विद्वानों का मत है कि बुद्धि का विकास मस्तिष्क और स्नायुओं के विकास पर निर्भर करता है। बुद्धि का संबंध वृहद् मस्तिष्क की सबसे ऊपरी सतह से है। सभी प्रकार की बौद्धिक क्रियाओं का नियंत्रण मस्तिष्क का यही भाग करता है। जन्म के समय यह भाग केवल पचास प्रतिशत ही विकसित रहता है और शेष पचास प्रतिशत का विकास परिपक्वता तक निरंतर होता रहता है। अत: जन्म के बाद बालक को एक स्वस्थ्य प्रकार के वातावरण की आवश्यकता होती है। जन्म के समय बच्चे के भीतर बुद्धि अल्प मात्र में ही रहती है तथा आयु में वृद्धि के साथ उसमें भी वृद्धि होती है। परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं हुआ कि परिपक्वता तक बुद्धियक्षीकरण, अधिगम, स्मृति, कल्पना, चिन्तन तथा तर्क की प्रक्रियाएँ ही बौद्धिक क्रियाएँ कही जाती है। इन्हीं जटिल मानसिक क्रियाओं के रूप से बुद्धि की अभिव्यक्ति होती है। बुद्धि समान गति से विकसित होती रहती है। बुद्धि का विकास बौद्धिक क्रियाओं के रूप में व्यक्त होता है। विकास के साथ-साथ इन सभी क्रियाओं की जटिलता बढ़ती जाते है। अंत में, बुद्धि विकास के संदर्भ में एक बात समझ लेना आवश्यक है। कभी बुद्धि विकास और ज्ञान-विकास को एक ही वस्तु नहीं समझना चाहिए। साधारण व्यक्ति बुद्धि और ज्ञान दोनों को एक ही वस्तु समझना हैं। परंतु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि बुद्धि एक जन्मजात योग्यता होती है जबकि ज्ञान एक अर्जित वस्तु है।

ISSN 0976-9714

www.ghrws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-IV, May 2011

सृजनात्मकता–

सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के क्रियेटिविटी से बना है। इस शब्द का अर्थ सृजन करना या कुछ न कुछ नया बनाना होता है। इस शब्द के सामानान्तर विधायकता, उत्पादन, रचनात्मकता, डिस्कवरी आदि शब्दों का प्रयोग होता है। कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिको ने इसकी परिभाषा इस तरह से दी है–

मेडनिक:– "सृजनात्मक चिन्तन में साहचर्य के तत्वों का मिश्रण रहता है जो विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संयोगशील होते हैं या किसी अन्य रूप में लाभदायक होते है। नवीन संयोग के विचार जितने कम होंगे, सृजनात्मक की संभावना उतनी ही अधिक होगी।" सृजनात्मक कार्य मे दो या अधिक वस्तुओं, तथ्यों आदि के संयोग से नवीनता का सृजन होना चाहिए। सृजनात्मक कार्य द्वारा व्यक्ति की प्रतिभा का विकास होना चाहिए। यद्यपि सृजनात्मकता कलाकारों के जीवन में अधिक व्यापक रूप से पायी जाती है। लेखक, चित्रकार, कवि, अभिनेता आदि में सृजनशीलता विद्यमान होती हैं।

सृजनात्मक का विकास :

सृजनात्मकता का उदय बाल्यावस्था में ही हो जाता है। सर्वप्रथम बालकों के खेल में इसकी अभिव्यक्ति होती है। बालक की आयु वृद्धि के साथ-साथ यह खेल के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में फैल जाती है। वैज्ञानिकों ने अनुसंधान के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि सृजनात्मकता लगभग ३० वर्ष की अवस्था तक अपने चरम सीमा तक पहुँचती है। इसके बाद या तो यह स्थिर रहती है या इसमें अवनति प्रारंभ हो जाती है।

सृजनात्मकता को एक अनुपन विचार भी समझा जाता है जो जीवन की सामान्य समस्याओं को एक गैर परम्परागत ढंग से कुछ अलग ही सुलझाने का प्रयास करता है। सृजनात्मकता के संबंध में यह अर्थ ठीक है, परन्तु यह इसकी पूर्ण व्याख्या नहीं करता है।

सृजनात्मकता के घटक:

सृजनशीलता एक जटिल क्रिया है एवं सृजनशील व्यवहार के अनुसंधान हेतु विगत दशकों में कई उपागम प्रतिपादित किए है। सृजनात्मकता के क्षेत्र में टोरेन्स द्वारा महत्वपूर्ण शोध किए गए। टोरेन्स में गिलफर्ड द्वारा किए गए अनुसंधान को आधार मानकर सृजनात्मक व्यवहार के कुछ संघटक बताए। इन संघटकों के आधार पर किए गए अनुसंधानों के द्वारा जो निष्कर्ष निकाले गए वे वास्तविकता से काफी नजदीक रहे। जब इन सृजनात्मक व्यवहार के संघटकों की बात करते हैं तो हमारा आशय सृजनात्मक व्यवहार के एक भाग से ही होता है। इन संघटकों में तीन घटक है–

www.ghrws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-IV, May 2011

- प्रवाहिता
- लचीलापन या नमनीयता
- मौलिकता

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विश्वविद्यालयीन स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले महिला व पुरूष खिलाड़ियों के मध्य बुद्धि व सृजनशीलता की तुलना करना था। प्रस्तुत अध्ययन हेतु यह परिकल्पना स्थापित की गयी कि, विश्वविद्यालयीन स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले महिला व पुरूष खिलाड़ियों के मध्य शाब्दिक तथा अशाब्दिक बुद्धि एवं सृजनशीलता के आयाम पर सार्थक भिन्नता पायी जाएगी।

इस हेतु विश्वविद्यायलीन प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व करने वाले २०० खिलाडी छात्रायें एवं २०० खिलाडी छात्रों का चयन महाराष्ट्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों से किया गया। छात्रों का चयन यादृच्छिक पद्धती द्वारा किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में बुद्धि परीक्षण एवं सृजनशीलता परीक्षण का चुनाव निम्न तरह से किया गया:-

बुद्धि परीक्षण:

विश्वविद्यालयीन स्तर के पुरूष खिलाड़ी तथा महिला खिलाड़ियों के बुद्धि के परीक्षण हेतु मेहरोत्रा (१९८४) द्वारा बनायी हुयी (MGTI) सम्मिश्रित बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण में दो उपखंड है। अ) शाब्दिक एवं ब) अशाब्दिक। यह परीक्षण उच्च स्तर पर वैध व विश्वसनीय है।

सृजनात्मकता परीक्षण :

पुरुष एवं महिला विश्वविद्यालयीन खिलाड़ियों के सृजनात्मकता का परीक्षण करने हेतु डॉ. बाकेर मेहदी (Dr. Baqer Mehdi) द्वारा तैयार की गई सृजनशीलता परीक्षण का उपयोग किया गया। यह परीक्षण भी उच्च स्तर पर वैध व विश्वसनीय है।

पुरूष तथा महिला खिलाड़ियों के मध्य शाब्दिक व अशाब्दिक बुद्धि की तुलना करने के लिये परिकल्पना, 'पुरूष तथा महिला खिलाड़ियों के मध्य शाब्दिक व अशाब्दिक बुद्धि पर सार्थक भिन्नता दिखाई देगी' की जॉच हेतु सांख्यिकीय विधी 'टी' टेस्ट का उपयोग किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका क्रमांक १ में प्रदर्शित किया गया है।

www.ghrws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-IV, May 2011

तालिका क्रमांक १

पुरूष तथा महिला खिलाड़ियों के मध्य बुद्धि (शाब्दिक – अशाब्दिक) की तुलना

	पुरुष खिलाड़ी (N=200)		महिला खिलाड़ी (N=200)		t	सार्थकता का स्तर
	Mean	S.D.	Mean	S.D.		
शाब्दिक बुद्धि (Verbal Intelligence)	47.18	2.82	47.50	2.69	1.14	NS
अशाब्दिक बुद्धि (Non Verbal Intelligence)	45.72	3.67	44.68	2.83	3.15	.01

t' value at .05 = 1.96, .01 = 2.57 and NS = Not Significant

उपरोक्त तालिका के निरीक्षण से स्पष्ट है कि, शाब्दिक बुद्धि पर पुरूष व महिला खिलाड़ियों का माध्य क्रमश: ४७.१८ तथा ४७.५० प्राप्त हुआ है। तथा 'टी' का मान १.१४ प्राप्त हुआ। जिससे स्पष्ट है कि दोनों समूहों के शाब्दिक बुद्धि पर एक दूसरे से कोई भिन्नता नही प्रदर्शित करते।

अशाब्दिक बुद्धि पर पुरूष व महिला खिलाड़ियों की तुलना करने से ज्ञात होता है कि, पुरूष खिलाड़ियो (m=45.72) की अशाब्दिक बुद्धि महिला खिलाड़ियों (m=44.68) की अपेक्षा उच्च स्तर की है। 'टी' का मान ३.१५ जो कि .०१ के सार्थकता स्तर पर है इसका समर्थन करता है।

उपरोक्त नतीजों से स्पष्ट है कि, पुरूष व महिला खिलाड़ियों के मध्य शाब्दिक बुद्धि के आधार पर कोई भिन्नता नही हैं। परंतु अशाब्दिक बुद्धि पर महिला व पुरूष खिलाडी एक दूसरे से भिन्न नजर आते है। अत: १ में वर्णित परिकल्पना, 'पुरूष तथा महिला खिलाड़ियों के मध्य शाब्दिक व अशाब्दिक बुद्धि पर सार्थक भिन्नता दिखाई देगी, अस्वीकार्य है।'

विश्वविद्यालयीन स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले महिला व पुरूष खिलाड़ियों की तुलना सृजनशीलता आयाम पर करने के लिये 'टी' टेस्ट का पुन: प्रयोग किया गया। पुरूष व महिला खिलाड़ियों के मध्य सृजनशीलता के आयामों में प्रवाह, नम्यता, मौलिकता व संयुक्त सृजनशीलता की तुलना को तालिका क्रमांक २ में प्रदर्शित किया गया है।

www.gnrws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-IV, May 2011

तालिका क्रमांक २

पुरूष तथा महिला खिलाड़ियों के मध्य सृजनशीलता की तुलना

चर	पुरुष खिलाड़ी (**N=200**)		महिला खिलाड़ी (N=200)		t	सार्थकता का स्तर
	Mean	**S.D.**	**Mean**	**S.D.**		
प्रवाह (Fluency)	14.26	5.42	15.53	7.42	1.96	.05
नम्यता (Flexibility)	11.98	2.85	12.80	4.05	2.35	.05
मौलिकता (Originality)	3.73	2.92	4.59	3.88	2.52	.05
सृजनशीलता (Creativity)	29.97	9.60	32.93	13.77	2.50	.05

t' value at .05 = 1.96, .01 = 2.57 and NS = Not Significant

प्राप्त नतीजों से स्पष्ट है कि, विश्वविद्यालयीन स्तर की महिला खिलाड़ियों (m=15.53) ने प्रवाह के उपर पुरूष खिलाड़ियों (m=14.26) से अपनी श्रेष्ठता .०५ के सार्थकता स्तर पर प्रदर्शित की है। (t=1.96>p)

नम्यता के आधार पर भी महिला खिलाड़ियों (m=12.80) ने पुरूष खिलाड़ियो (m=11.98) से अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित की है। 'टी' २.३५ जो कि .०५ के सार्थकता स्तर पर इसका समर्थन करता है।

उपरोक्त परिणामों से यह भी स्पष्ट है कि महिला खिलाड़ियों (m=3.73) ने महिला खिलाड़ियों (m=4.59) की तुलना में कम मौलिकता का प्रदर्शन किया है। 'टी' २.५२ जो कि, .०५ के सार्थकता स्तर पर है, इसकी पुष्टि करता है।

उपरोक्त तीनों आयामों प्रवाह, नम्यता व मौलिकता की तुलना से स्पष्ट है कि, महिला खिलाड़ियों ने पुरूष खिलाड़ियों की तुलना में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। जब उपरोक्त तीनों आयामों के आधार पर संयुक्त सृजनशीलता की तुलना महिला व पुरुष खिलाड़ियों के बीच की गयी, तब भी महिला खिलाड़ियों (m=32.93) ने पुरूष खिलाड़ियों (m=29.97) की तुलना में .०५ के सार्थकता स्तर पर अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित की।

उपरोक्त परिणामों से स्पष्ट है विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व करने वाली महिला खिलाड़ियों ने सृजनशीलता पर पुरूष खिलाड़ियों को काफी पीछे छोड़ दिया है। अत:

www.gnrws.in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-IV, May 2011

वर्णित परिकल्पना, 'पुरूष तथा महिला खिलाड़ियों के मध्य सृजनशीलता के आयामों पर सार्थक भिन्नता दिखाई देगी' स्वीकार्य की जाती है।

पुरूष व महिला खिलाड़ियों के मध्य बुद्धि व सृजनशीलता की तुलना को निम्न आलेख में प्रस्तुत किया गया है।

आलेख

महिला व पुरूष खिलाड़ियों के मध्य बुद्धि व सृजनशीलता की तुलना

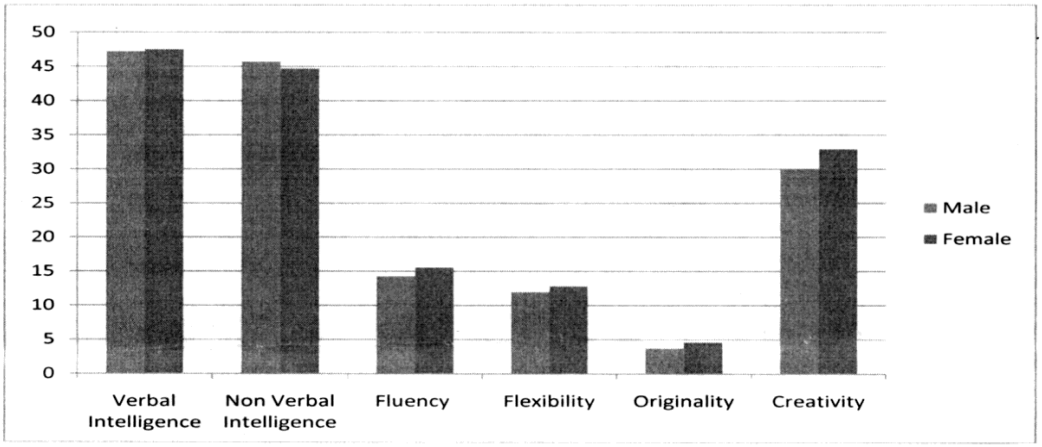

परिणाम

- अशाब्दिक बुद्धि आयाम पर पुरूष खिलाड़ियों ने महिला खिलाड़ियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया। परंतु शाब्दिक बुद्धि आयाम पर दोनों समूहों के मध्य कोई सार्थक भिन्नता नही दिखायी दी।
- महिला खिलाड़ियों ने सृजनशीलता के आयाम पर पुरूष खिलाड़ियों ने सृजनशीलता के आयाम पर पुरूष खिलाड़ियों की अपेक्षा अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित की।

निष्कर्ष

✓ पुरूष व महिला खिलाड़ियों के मध्य शाब्दिक बुद्धि के आधार पर कोई भिन्नता नही हैं। परंतु अशाब्दिक बुद्धि पर महिला व पुरूष खिलाडी एक दूसरे से भिन्न नजर आते है।

✓ विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व करने वाली महिला खिलाड़ियों ने सृजनशीलता पर पुरूष खिलाड़ियों को काफी पीछे छोड़ दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

01. Agashe & Helode: Test of sports emotional intelligence, unpublished, 2006.

www.gn...in

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-IV, May 2011

02. Atkinson, Atkinson & Hilgard: 'A trait refers to any characteristic that differs from person to person in a relatively permanent and consistent way,' Introduction to psychology, p. 389, 1983.
03. Bawa G.S.et al: "Personality profiles and differences in personality traits between national men football and gymnastics teams." The Research Bi-Annual for Movement, Vol-8 pp. 16-22, 1998.
04. Burch G; et al: Personality, creativity and latent inhibition, European Journal of Personality, vol.20, pp. 107-122, 2006.
05. Berger.R.A and Littlefield O.H., Comparison between football athlete and non-athlete on personality. Rest Quart. Vol. 40, p. 663, 1969.
06. Boespflug R.Leroy: The relationships between physical fitness, social acceptability, social adjustment, intelligence, and academic achievement of junior high school boys, completed research in health, physical education and recreation, 10:97, 1968.
07. Buckellow F. William: A cross sectional and longitudinal study of various factors of growth and development of fifth, sixth, seventh and eighth grade boys, completed research in health, physical education and recreation, 7:83, 1965.
08. Bruce, Robert Glen, "The relationship of physical fitness test scores to certain social, personal and academic factor among selected ninth grade males," completed research in health, physical education and recreation, 6:89, 1963.
09. पाठक पी.डी. : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९९६.

www.ghrws.in

ISSN 0976-9714

Variorum, Multi- Disciplinary e-Research Journal
Vol.-01, Issue-IV, May 2011

10. भाई योगेन्द्र जीत : बाल मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, १९८१.
11. मुहम्मद सुलेमान एवं रामेन्द्र कुमार सिन्हा : आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान, धर्मयुग प्रेस, न्यू पटना, जनवरी, १९७७.
12. कश्यप शारदा : जनजातीय तथा गैर जनजातीय खिलाड़ियों के संज्ञानात्मक एवं असंज्ञानात्मक आयामों का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं.र.वि.वि., रायपूर (छ.ग.)
13. अरूण कुमार सिंह तथा आशीष कुमार सिंह : व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगला रोड, दिल्ली. २०००.

www.ghrws.in